जादुई अंडा

यूक्रेनी लोक कथा

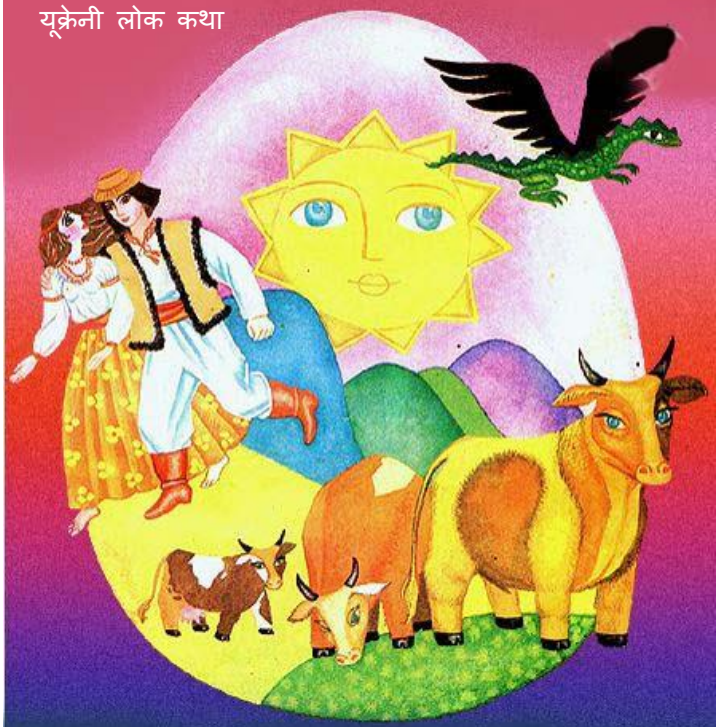

चित्र: जे. मिर्चेंको

हिंदी: अरविन्द गुप्ता

उन दिनों जब पक्षी राजा था और चुहिया रानी थी, तब उनके पास अपना एक खेत था जिसमें उन्होंने गेहूँ बोया था. जैसे ही गेहूँ पक गया, उन्होंने उसे काटा और आपस में बाँटना शुरू कर दिया, और जब सबकुछ बंट गया, तो अंत में एक छोटा सा एक दाना बच गया.

"वो मुझे यह लेने दो!" चुहिया ने कहा.

"नहीं, वो मुझे लेने दो!" पक्षी ने कहा.

अब उन्हें नहीं पता था कि वे क्या करें, क्योंकि दोनों ही दूसरे को वो दाना देने को तैयार नहीं थे. क्योंकि पूरे देश में उनसे ऊँचा और कोई नहीं था, इसलिए वे इस मामले को अदालत में भी नहीं ले जा सकते थे.

चुहिया ने कहा, "मैं अनाज के दाने को दो हिस्सों में काटूंगी और फिर हम में दोनों उसका आधा-आधा ले लेंगे."

इस पर पक्षी सहमत हो गया, लेकिन जैसे ही चूहे ने अपने दांतों के बीच में दाने को दबाया, वो उसे लेकर अपने बिल की ओर भाग गई!

पक्षी बहुत क्रोधित हुआ, उसने अपने बाकी पक्षी साथियों को एक-साथ बुलाकर, और उन्हें चुहिया से लड़ने के लिए ले गया. लेकिन चुहिया भी हार मानने वाली नहीं थी. उसने भी जानवरों को बुलाया और अपनी एक सेना इकट्ठी की. दोनों सेनाएँ जंगल में मिलीं, और उनके बीच जो भीषण युद्ध हुआ वैसी लड़ाई पहले कभी नहीं देखी गई. वो किसी भी लड़ाई से अलग थी!

पक्षी बेहतर स्थिति में थे, क्योंकि वे हमले के दौरान हवा में उड़ सकते थे और पेड़ों में छिप सकते थे, जबकि जानवरों के पास छिपने के लिए कोई जगह नहीं थी और इसलिए वे बड़ी संख्या में मारे गए.

लड़ाई पूरे दिन चलती रही और शाम को, दोनों पक्षों को आराम करने का मौका देने के लिए लड़ाई रोक दी गई. तभी चुहिया ने अपनी सेना का निरीक्षण किया और यह देखकर कि उसमें कोई चींटी नहीं थीं, उन्हें तुरंत चींटियों को अपनी सेना में शामिल होने का आदेश दिया. चींटियाँ दौड़ती हुई आईं, और चुहिया ने उनसे अंधेरे की आड़ में पेड़ों पर चढ़कर पक्षियों के पंखों को काटने को कहा.

सुबह हुई, और पक्षी चिल्लाया:

"सब सुनो, अब फिर से लड़ने का समय आ गया है!"

यह सुनकर सभी पक्षी उठे, लेकिन अब पक्षियों के पंख गायब हो चुके थे, इसलिए वे उड़ नहीं सके. वे ज़मीन पर गिर पड़े, जानवरों ने उन पर हमला किया और उन्हें मार डाला, और इस तरह युद्ध चुहिया ने युद्ध जीत लिया.

लेकिन पक्षियों के बीच एक चील भी थी, जिसे आभास था कि पंखों के बिना उड़ना कितना खतरनाक होगा, इसलिए वो बिल्कुल नहीं उड़ी और एक पेड़ पर बैठी रही. एक शिकारी ने चील को वहां बैठे देखा, फिर उसने अपनी बंदूक उठाकर उस पर गोली चलाने के लिए निशाना साधा, लेकिन चील ने कहा:

"मुझे मत मारो, शिकारी! अगर तुम कभी मुसीबत में पड़ोगे तो मैं तुम्हारी ज़रूर मदद करूंगी."

चील के शब्दों ने शिकारी को सिर्फ एक पल के लिए रोका, लेकिन उसने दुबारा सावधानीपूर्वक निशाना साधा और चील पर फिर से चील पर गोली चलाने की कोशिश की, लेकिन चील ने उससे उसे न मारने की दुबारा से विनती की.

"शिकारी, मुझे अपने साथ ले जाओ और मुझे खिलाओ, और तुम्हें उस बात का पछतावा नहीं होगा!" चील ने कहा.

लेकिन इस पर भी शिकारी नहीं रुका और वो चील को गोली मारने ही वाला था कि तभी चील ने कहा:

"मुझे मत मारो, शिकारी! मुझे अपने साथ ले जाओ, और तुम देखोगे कि मैं तुम्हारी कितनी बड़ी सेवा करूंगी!"

इस बार शिकारी ने चील की बात पर विश्वास कर लिया. वो पेड़ पर चढ़ा, उसने चील को नीचे उतारा और उसे अपने साथ ले गया.

चील ने कहा:

"शिकारी, मुझे अपने साथ घर ले चलो, और जब तक मेरे पंख फिर से बड़े न हो जाएं, तब तक मुझे मांस के अलावा और कुछ नहीं खिलाओ."

अब, शिकारी के पास दो गायें और एक बैल था, और उसने चील को खिलाने के लिए एक गाय का वध कर दिया. गाय का मांस पूरे एक वर्ष तक चला, और जब चील ने सब मांस खा लिया, तो उसने शिकारी से कहा:

"अब मुझे आज़ाद करो और मुझे थोड़ी देर के लिए इधर-उधर उड़ने दो, क्योंकि मैं देखना चाहती हूँ कि मेरे पंख पर्याप्त बड़े हो गए हैं या नहीं."

शिकारी ने उसे आज़ाद कर दिया, और फिर चील ने पूरी सुबह उड़ने का अभ्यास किया और दोपहर में वो फिर से शिकारी के पास वापस आ गई.

"मैं अभी भी कमज़ोर हूँ," चील ने कहा. "तुम्हें मेरे लिए अब अपनी दूसरी गाय का वध करना होगा."

शिकारी ने दूसरी दूसरी गाय का भी वध किया. चील ने एक वर्ष तक दूसरी गाय का मांस खाया और उसके बाद वो फिर से उड़ने गई. उसने लगभग पूरा दिन हवा में उड़ते हुए बिताया, और जब शाम हुई तभी वो शिकारी के पास वापस आई.

"मैं अभी भी उतनी मजबूत नहीं हूं," चील ने शिकारी से कहा, "अब तुम्हें मेरे लिए अपना बैल भी काटना होगा."

शिकारी इस बारे में सोचने लगा. "चील जो कह रही है मुझे वैसा करना चाहिए या नहीं?" उसने खुद से पूछा.

उसने इस पर विचार किया और कहा:

ठीक है, मैंने अपनी गायों का वध किया, तो फिर मैं अपने बैल बैल का भी वध कर सकता हूँ!"

उसने बैल का वध किया और उसका मांस चील को दिया. चील ने पूरे वर्ष वो मांस खाया. फिर वो तुरंत बादलों तक उड़ी! वो बहुत देर तक इधर-उधर उड़ती रही, लेकिन अंत में उड़ते हुए वापस आई और उसने शिकारी से कहा:

"शिकारी, तुम्हारा बहुत धन्यवाद. तुमने मुझे अच्छा खाना खिलाया, और मुझे फिर से ताकतवर बनाया है. और अब तुम मेरी पीठ पर चढ़ जाओ!"

"मैं ऐसा क्यों करूं?" शिकारी ने पूछा.

"मेरी पीठ पर बैठो और फिर तुम देखना!" चील ने कहा.

शिकारी, चील की पीठ पर चढ़ गया, और चील उसे सीधे बादलों तक ले गई और फिर उसने उसे नीचे फेंक दिया. लेकिन जब शिकारी अभी भी जमीन से कुछ दूर था तब चील ने उसे पकड़ लिया.

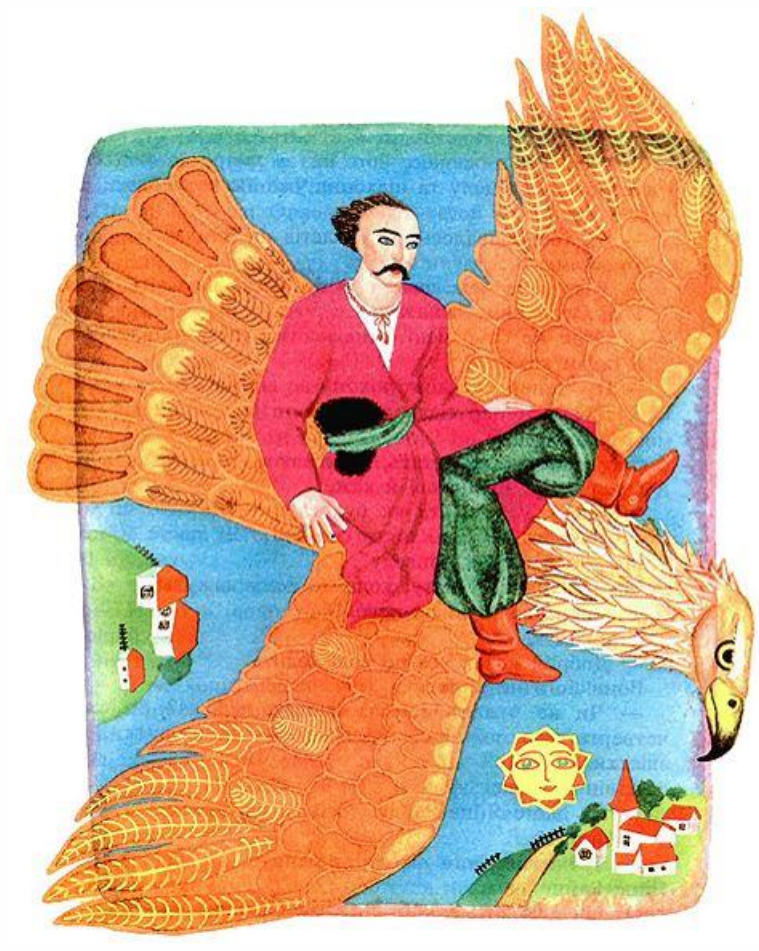

"बताओ, तुम्हें वो कैसा लगा?" चील ने पूछा.

शिकारी ने उत्तर दिया, "मुझे लगा कि मैं जीवित कम, मृत ज़्यादा हूँ."

"जब तुम मुझे पहली बार गोली मार रहे थे तो मुझे भी ऐसा ही लगा था. आओ, अब, फिर से मेरी पीठ पर चढ़ जाओ!"

शिकारी ऐसा करने के लिए इस बार बिल्कुल भी उत्सुक नहीं था, लेकिन फिर भी वो चील की पीठ पर चढ़ गया. और चील उसे घने बादलों में ले गई, पहले की तरह चील ने शिकारी को फिर गिरा दिया और उसे फिर से तभी पकड़ा जब शिकारी जमीन से लगभग बारह फीट ऊपर था.

"अच्छा, इस बार तुम्हें कैसा लगा?" चील ने पूछा.

शिकारी ने उत्तर दिया, "मुझे ऐसा लगा मानो मेरी सारी हड्डियां रेत में बदल गई हों."

"जब तुम मुझे दूसरी बार गोली मार रहे थे तो मुझे भी ऐसा ही महसूस हुआ," चील ने कहा, "आओ, अब, फिर से मेरी पीठ पर चढ़ जाओ!"

शिकारी उसकी पीठ पर चढ़ गया, और इस बार चील ने उसे बादलों से भी ऊपर उठाया, और शिकारी को फिर से नीचे फेंक दिया और उसे फिर तभी पकड़ा जब वो एकदम जमीन पर लगभग गिरने वाला था.

"अच्छा, इस बार तुम्हें कैसा लगा?" चील ने पूछा.

शिकारी ने उत्तर दिया, "मुझे ऐसा लगा जैसे मुझमें अब कोई भी जान नहीं बची है."

"जब तुम मुझ पर तीसरी बार गोली चलाने वाले थे तो मुझे भी ऐसा ही महसूस हुआ था," चील ने कहा, "लेकिन अब हम दोनों बराबर हो चुके हैं. इसलिए तुम दुबारा मेरी पीठ पर बैठ जाओ और मैं इस बार मैं तुम्हें अपने घर घुमाने ले जाऊंगी."

वे उड़े और चील के चाचा के घर पहुंचकर ही रुके.

चील ने शिकारी से कहा:

"घर में जाओ, और अगर वे तुमसे पूछें कि क्या तुमने मुझे देखा है तो बस इतना कहना: 'अगर तुम मुझे जादुई अंडा दोगे तो ही मैं चील को यहां लाऊंगा.'"

शिकारी घर में गया और सबसे पहले उन्होंने शिकारी से पूछा कि क्या वो अपनी मर्जी से वहाँ आया था.

शिकारी ने उत्तर दिया, "एक सच्चा कोसैक अपनी मर्जी के बिना, कभी कहीं नहीं जाता है."

"क्या तुमने हमारे भतीजे के बारे में कुछ सुना है?" उन्होंने शिकारी से पूछा. "वो तीन साल से युद्ध में है और हमें उसकी कोई खबर नहीं है."

शिकारी ने कहा, "अगर तुम मुझे जादुई अंडा दोगे तो मैं तुम्हारे भतीजे को यहां ले आऊंगा."

"नहीं, हम ऐसा नहीं कर सकते. बेहतर होगा कि हम उसे दोबारा कभी न देखें."

शिकारी खाली हाथ चील के पास वापस गया और जो हुआ वो उसने बताया.

"चलो, हम आगे चलें!" चील ने कहा.

वे उड़ते रहे और तब तक नहीं रुके जब तक वे चील के भाई के घर नहीं पहुंच गए. शिकारी ने भाई को वही बताया जो उसने चील के चाचा-चाची को बताया था, लेकिन चील के भाई ने भी उसे जादुई अंडा नहीं दिया.

फिर वे चील के पिता के घर के लिए उड़कर गए और जब वे वहां पहुंचे तो चील ने कहा:

"घर में जाओ और जब वे मेरे बारे में पूछें तो उन्हें बताना कि तुमने मुझे देखा है और मुझे उनके पास ला सकते हो."

शिकारी घर में आया और सबसे पहले उन्होंने उससे पूछा कि क्या वो अपनी मर्जी से वहां आया था.

"एक सच्चा कोसैक कभी भी अपनी मर्जी और इच्छा के बिना कहीं नहीं जाता है!" शिकारी ने उत्तर दिया.

"क्या तुमने हमारे बेटे को देखा है? अब तीन साल हो गए हैं जब से वो युद्ध में है और हमें यह तक नहीं पता कि वो ज़िंदा है या मर गया है."

शिकारी ने कहा:

"मैंने आपके बेटे को देखा है और मैं उसे आपके पास ला सकता हूं, बशर्ते आप मुझे जादुई अंडा दें."

"तुम्हें उसकी क्या जरूरत है!" चील के पिता ने कहा. "उसके बदले में हम तुम्हें सोने की बोरियाँ देंगे."

"मुझे फिरौती नहीं चाहिए, मुझे जादुई अंडे के अलावा और कुछ नहीं चाहिए!" शिकारी ने कहा.

"तो ठीक है, हमारे बेटे को हमारे पास ले आओ, और फिर जादुई अंडा तुम्हें मिल जाएगा!"

शिकारी चील को लेकर आया, और चील की माँ और पिता उसे देखकर इतने खुश हुए कि उन्होंने शिकारी को जादुई अंडा दे दिया.

उन्होंने शिकारी से कहा, "जादुई अंडे को तब तक मत तोड़ना जब तक तुम घर न पहुंच जाओ," और तोड़ने से पहले जादुई अंडे के चारों ओर एक ऊंची बाड़ ज़रूर बनाना."

शिकारी अपने रास्ते पर निकल पड़ा, वह चलता रहा और चलता रहा. रास्ते में उसे बड़ी ज़ोर की प्यास लगी! वो एक कुएँ के पास पहुंचा, लेकिन जैसे ही वह पानी पीने के लिए बाल्टी पर झुका, जादुई अंडा उसके किनारे से टकराया और टूट गया. और फिर अंडे में से गायों का पूरा झुंड बाहर निकला! शिकारी को बहुत परेशानी हुई. वो गायों को अपने पास से भागने से कैसे रोके? वो पहले एक तरफ से और फिर दूसरी ओर से उनपर झपटा और अपनी ऊँची आवाज़ में चिल्लाया, लेकिन वो कुछ नहीं कर सका.

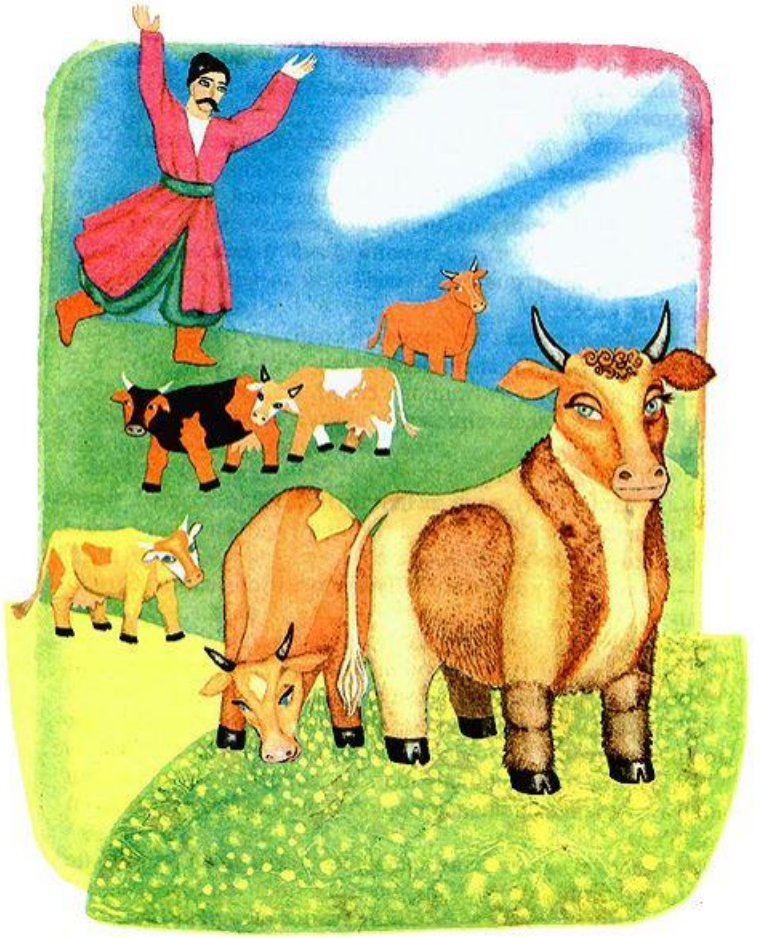

अचानक एक साँप रेंगकर उसके पास आया.

"अगर मैं गायों को फिर से अंडे में वापस रख दूं, तो फिर तुम मुझे क्या दोगे, भले आदमी?" साँप ने मानवीय आवाज़ में पूछा.

"आप क्या पसंद करेंगे?" शिकारी ने पूछा.

"क्या आप मुझे वह चीज़ दोगे जो तुम्हारे दूर रहने के दौरान मुझे तुम्हारे घर में दिखाई दी थी?"

"मैं ज़रूर दूंगा!"

साँप ने गायों को वापस अंडे में डाल दिया, टूटे हुए खोल को फिर से जोड़ दिया और अंडा शिकारी को दे दिया.

शिकारी घर आया और जब उसे पता चला कि उसकी गैरहाज़िरी में उसके एक बेटे का जन्म हुआ था तो उसने दुःख के मारे अपना सिर पीट लिया.

"तुम ही मेरे वो बेटे हो जिसे मैंने साँप को सौंपने का वादा किया था!" वो रोया.

शिकारी और उसकी पत्नी कुछ समय तक बेहद दुखी रहे, और फिर उन्होंने कहा:

"इसके बारे में हम कुछ भी नहीं कर सकते हैं. इसलिए उसे बारे में शोक करने से कोई फायदा नहीं होगा!"

इसलिए उन्होंने अंडे के चारों ओर एक बाड़ बनाई और फिर अंडे को तोड़ दिया और गायों को उसमें से बाहर निकाला, और गायों का झुंड इतना बड़ा हो गया कि वे समृद्ध और अमीर हो गए.

साल बीतते गए, और इससे पहले कि उन्हें पता चलता उनका बेटा एक बड़ा आदमी हो गया था.

"आपने साँप से कहा कि आप मुझे उसे सौंप देंगे, पिताजी, इसलिए आपको अपना वचन निभाना होगा!" बेटे ने कहा.

और फिर बेटा, साँप से मिलने चला गया.

"मैं तुम्हें तीन काम करने को दूँगा," साँप ने कहा, "यदि तुम वो काम करोगे तो तुम घर वापिस जा पाओगे; यदि तुम वो नहीं कर पाओगे, तो मैं तुम्हें खा जाऊँगा!"

अब, साँप का घर एक विशाल, जंगल उगी ज़मीन से घिरा हुआ था. जहाँ तक नज़र जाती थी वहाँ तक जंगल ही जंगल फैला हुआ था.

"उस ज़मीन को देखो?" साँप ने कहा. "देखो, तुम्हें उन पेड़ों को काटना होगा, ज़मीन को जोतना होगा और उसमें गेहूं बोना होगा, गेहूं को काटना होगा और उसे एक ही रात में ढेर में इकट्ठा करना होगा. और तुम्हें उस गेहूं से कुछ रोटियां बनानी होगी और उन्हें सुबह उठने पर, खाने के लिए मेरी मेज पर रखनी होंगी.''

शिकारी का बेटा सिर लटकाए चल दिया. कुछ देर में वो एक तालाब के पास पहुंचा. अब, उसके बगल में एक पत्थर का जादुई खंभा खड़ा था, और उस जादुई खंभे ने, साँप की बेटी को बंदी बना लिया गया था.

शिकारी का बेटा खम्भे के पास खड़ा होकर रोने लगा. अंदर लड़की ने उसका रोना सुना और पूछा कि वह क्यों रो रहा था.

"बताओ मैं क्या करूं? सांप ने मुझे एक असंभव काम दिया है जो मैं एक रात में कभी नहीं कर सकता!" शिकारी के बेटे ने कहा.

"और वो काम क्या है?"

शिकारी के बेटे ने उसे सब कुछ बताया, फिर लड़की ने कहा:

"अगर तुम मुझसे शादी करोगे, तो मैं वो सब करूंगी जो साँप ने तुमसे कहा है."

"अवश्य."

"ठीक है, तो अब सो जाओ, क्योंकि उसके लिए रोटी ले जाने के लिए तुम्हें कल जल्दी उठना होगा."

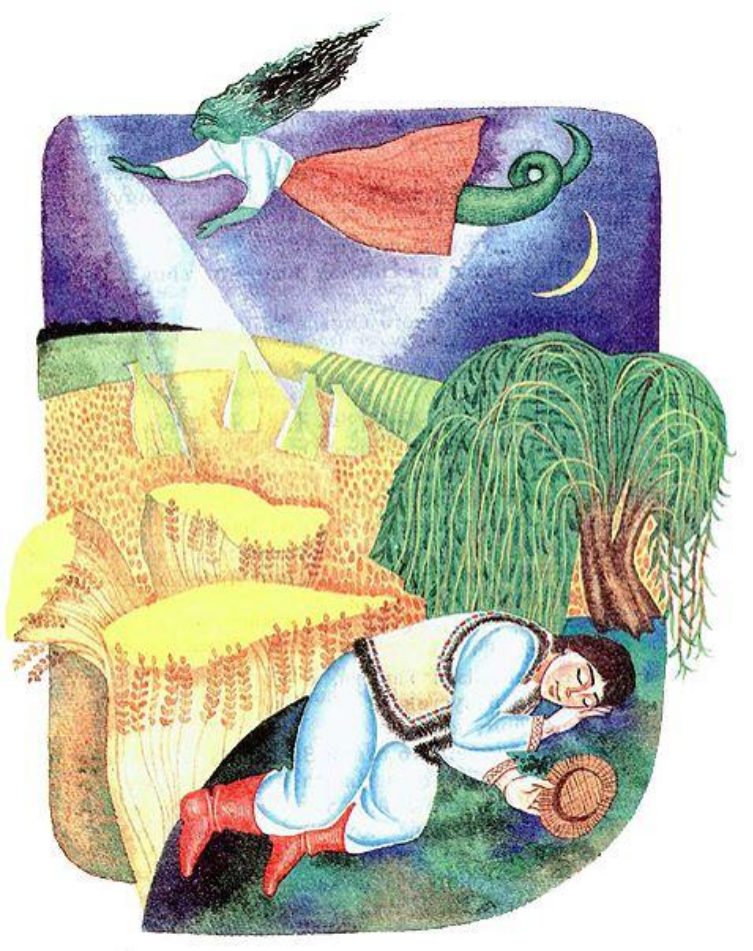

शिकारी का बेटा सो गया. फिर लड़की जंगल में चली गई और उसने सीटी बजाई, और देखते-ही-देखते पेड़ चरमराने और कराहने लगे. एक छोर पर ज़मीन साफ हो गई और दूसरे छोर पर गेहूं बोया जाने लगा. अभी सुबह नहीं हुई थी जब उस गेहूं से रोटियां पक गई, और शिकारी के बेटे ने उन्हें लड़की से लिया, उन्हें वो साँप की झोपड़ी में ले गया और उन्हें मेज पर रख दिया.

साँप जाग गया. वो बाहर आँगन में आया और जंगल के बजाय उसके चारों ओर एक विशाल खेत दिखा जिस पर गेहूं के पौधों के अलावा कुछ भी नहीं था.

"मैंने जो कहा था, तुमने वही किया है, मैं देख रहा हूँ," साँप ने शिकारी के बेटे से कहा. "और अब यह तुम्हारा दूसरा काम है. सबसे पहले उस पहाड़ के नीचे एक बड़ा मार्ग खोदो और उसमें एक नदी को बहाओ, और फिर नदी के तट पर कुछ गोदाम बनाओ और उन्हें गेहूं से भर दो. तुम्हारे साथ व्यापार करने के लिए नावें, व्यापारियों को लेकर वहां आएंगी. और तुम उनको वो सब गेहूँ बेच देना. और यह सब काम मेरे सुबह उठने तक हो जाना चाहिए!"

शिकारी का पुत्र पत्थर के खम्भे के पास गया और फिर रोने लगा.

"तुम क्यों रो रहे हो?" लड़की ने उससे पूछा.

शिकारी ने बेटे ने उसे उस कार्य के बारे में बताया जो साँप ने उसे सौंपा था. फिर लड़की ने कहा:

"बिस्तर पर जाकर सो जाओ. देखो, मैं वो सब कुछ करूंगी."

उसने एक सीटी बजाई, और कुछ ही समय में पहाड़ के नीचे एक रास्ता खुद गया, फिर नदी उसमें से बहने लगी. नदी के तट पर गोदाम बनाए गए. और अभी सुबह भी नहीं हुई थी जब लड़की शिकारी के बेटे को जगाने आई और उसे बताया कि व्यापारी उसका इंतजार कर रहे थे और उसे जल्दी करनी थी और उनकी नावें लादनी थीं.

साँप उठा और यह देखकर बहुत आश्चर्यचकित हुआ कि सब कुछ वैसा ही हुआ था जैसा उसने कहा था.

"और अब यह तुम्हारा तीसरा कार्य है," उसने शिकारी के बेटे से कहा. "रात होते ही तुम्हें एक सुनहरा खरगोश पकड़ना होगा और सुबह होने से पहले उसे मेरे पास लाना होगा."

शिकारी का बेटा चला गया और वो फिर से रोने लगा. जब वो पत्थर के खम्भे के पास पहुंचा तो लड़की ने उससे पूछा कि साँप ने उसे कौन सा तीसरा काम सौंपा था. लड़के ने उसे काम बताया, फिर लड़की ने कहा:

"देखो, यह काम उस कार्य से भी अधिक कठिन है जो साँप ने तुम्हें पहले सौंपा था! लेकिन चलो हम उस चट्टान पर चलेंगे. मैं खरगोश को उसके बिल से बाहर निकालूंगी, और तुम्हें उसे पकड़ने की कोशिश करनी होगी. हाँ, एक बात ध्यान रखना, जो भी बिल से बाहर आए तुम उसे पकड़ लेना क्योंकि वो केवल सुनहरा खरगोश ही होगा!"

फिर लड़की बिल में उतर गई और खरगोश को बाहर निकालने की कोशिश करने लगी और शिकारी का बेटा बाहर खड़ा होकर इंतजार करने लगा.

अचानक बिल से रेंगते हुए फुफकारता हुआ एक साँप बाहर निकला. शिकारी के बेटे ने उसे रोकने की कोशिश नहीं की ओर उसे जाने दिया. और उसके तुरंत बाद लड़की बिल से बाहर निकली और लड़के के पास वापस आई.

"क्या मुझसे पहले कोई बाहर नहीं निकला?" लड़की ने पूछा.

"एक साँप बाहर निकला था, लेकिन मुझे डर लगा कि कहीं वो मुझे काट न ले इसलिए मैंने उसे छोड़ दिया!"

"तुम कितने मूर्ख हो! साँप के भेष में वो सुनहरा खरगोश था! ठीक है, मैं अब फिर से वापस जा रही हूं, और यदि कोई बिल से बाहर निकले और तुमसे कहे कि वहां कोई सुनहरा खरगोश नहीं है, तो उसकी बात पर विश्वास मत करना. तुम तेजी से उसे तुरंत पकड़ लेना!"

लड़की फिर से बिल में घुसी और खरगोश को बाहर निकालने लगी, और फिर एक झुर्रीदार बूढ़ी औरत बिल में से बाहर आई.

"तुम क्या ढूंढ रहे हो, मेरे बेटे?" उसने शिकारी के बेटे से पूछा.

"सुनहरा खरगोश, दादी."

"तुम गलत जगह ढूंढ रहे हो! यहाँ कोई सुनहरा खरगोश नहीं है."

बूढ़ी औरत चली गई, और लड़की बिल से बाहर निकली और शिकारी के बेटे के पास वापस आई.

"अगर खरगोश नहीं तो क्या कोई और बिल से बाहर नहीं आया?" लड़की ने पूछा.

"किसी और ने नहीं बल्कि एक बूढ़ी महिला ने मुझसे पूछा कि मैं क्या ढूंढ रहा था. जब मैंने उसे बताया कि मैं क्या खोज रहा था, तो उसने कहा कि वहां कोई सुनहरा खरगोश नहीं था, और फिर मैंने उसे जाने दिया."

"तुम्हें ऐसा नहीं करना चाहिए था, क्योंकि वो बूढ़ी औरत के भेष में सुनहरा खरगोश ही था. अब तुम उसे कहीं भी नहीं ढूंढ पाओगे, इसलिए मैं अब खुद एक खरगोश बनने जा रही हूं. फिर तुम मुझे साँप के पास ले जाना और मुझे उसके सामने एक कुर्सी पर बिठा देना. लेकिन ध्यान रहे कि तुम साँप को मुझे छूने मत देना, क्योंकि यदि तुमने ऐसा करने दिया तो वो पहचान लेगा कि मैं कौन हूँ और फिर साँप तुम्हें और मुझे, दोनों को मार डालेगा."

फिर लड़की एक सुनहरे खरगोश में बदल गई, और शिकारी का बेटा उसे साँप के पास ले गया और उसके सामने एक कुर्सी पर रख दिया.

"यह रहा आपका सुनहरा खरगोश," शिकारी के बेटे ने कहा.

"और अब मुझे लगता है कि मैं तुम्हें छोड़ दूंगा," साँप ने कहा "चलो अब तुम चले जाओ!"

शिकारी का बेटा चला गया, लेकिन जैसे ही साँप घर से बाहर निकला, लड़की ने फिर से अपना आकार ले लिया. वो बाहर भागी और शिकारी के बेटे के साथ आकर मिल गई. फिर वे जितनी तेजी से भाग सकते थे, वे एक-साथ दौड़े!

साँप लौट आया, और यह देखकर कि उसके साथ धोखा हुआ है, उसने अपने पति को उनके पीछे भेज दिया.

लड़की और शिकारी के बेटे ने महसूस किया कि उनके नीचे धरती हिल रही थी और गड़गड़ाहट हो रही थी. फिर लड़की ने कहा:

"वे हमारे पीछे आ रहे हैं! मैं खुद को गेहूँ के खेत में और तुम्हें एक बूढ़े चौकीदार में बदलने जा रही हूँ, और जब वे तुमसे पूछें कि क्या तुमने एक आदमी और एक लड़की को यहाँ से गुजरते हुए देखा है तो तुम्हें कहना होगा कि तुमने देखा था, लेकिन वो तब था जब गेहूँ बोया जा रहा था."

नर साँप को वहां आने में देर नहीं लगी. साँप सीधे बूढ़े चौकीदार के पास गया.

"क्या तुमने एक आदमी और एक लड़की को यहाँ से गुजरते देखा?" उसने पूछा.

"मैंने देखा था," चौकीदार ने उत्तर दिया.

"कब देखा था?"

"जब गेहूँ बोया जा रहा था."

"गेहूं काटने के लिए तैयार था. वे कल ही यहाँ से भाग गए."

और उसके बाद साँप वापस लौट गया.

फिर लड़की और शिकारी का बेटा अपने असली रूप में वापस आ गए और फिर से भागे.

कुछ समय बाद नर-साँप घर वापिस पहुंचा.

" मैं देख रही हूं तुमने उन्हें नहीं पकड़ा!" साँप ने कहा. “क्या रास्ते में कोई नहीं मिला?”

"कोई भी नहीं मिला. बाद एक बूढ़ा आदमी मिला जो गेहूं के खेत की रखवाली कर रहा था. मैंने उससे पूछा कि क्या उसने कहा कि उसने एक आदमी और एक लड़की को वहां से गुजरते देखा है लेकिन वो तब था जब गेहूं बोया जा रहा था. इसलिए मैं पीछे मुड़कर वापिस आ गया क्योंकि मैंने देखा कि अब गेहूं कटने के लिए तैयार था.”

"तुम्हें चौकीदार को मार देना चाहिए था और गेहूं के खेत को पैरों से रौंद देना चाहिए था, क्योंकि वो खेत लड़की थी और शिकारी का बेटा चौकीदार था. तुम फिर से उनके पीछे जाओ और इस बार उन्हें मार डालो!"

नर-साँप भगोड़ों के पीछे वापिस गया. लड़की को अपने नीचे धरती हिलती और गड़गड़ाती महसूस हुई और उसने कहा:

"नर-साँप फिर से हमारा पीछा कर रहा है और करीब आ रहा है! मैं खुद को एक पुराने, टूटे हुए मठ में बदलने जा रही हूं और तुम्हें एक साधु में, और जब नर साँप तुमसे पूछे कि क्या तुमने एक आदमी और एक लड़की को पास से गुजरते हुए देखा है तो तुम कहना कि तुमने उन्हें देखा था, लेकिन वो तब था जब मठ का निर्माण हो रहा था.''

नर-साँप उड़ता हुआ आया. वो अपने सामने एक साधु को देखकर, सीधे उसके पास पहुंचा.

"क्या तुमने एक आदमी और एक लड़की को यहाँ से गुजरते देखा?" नर-साँप ने पूछा.

साधु ने उत्तर दिया, "मैंने देखा था, लेकिन वो तब देखा था जब मठ का निर्माण हो रहा था."

"यह कम-से-कम सौ साल पहले की बात होगी, और वे कल ही यहाँ भाग गए!"

इसलिए फिर नर-साँप वापस लौट आया और घर पहुंचा.

"मैंने एक मठ और उसके बगल में एक बूढ़े साधु को देखा, और मैंने उससे भगोड़ों के बारे में पूछा," नर-साँप ने अपनी पत्नी से कहा, "और जब उसने कहा कि उसने उन्हें मठ के निर्माण के दौरान देखा था, तो मुझे पता चला कि वे वो नहीं थे जिन्हें हम खोज थे, क्योंकि मठ कम-से-कम सौ साल पुराना था."

"तुम्हें साधु को मार देना चाहिए था और मठ को तोड़ देना चाहिए था, क्योंकि वो शिकारी के बेटा और लड़की के भेष में थे," साँप ने कहा. "अब मैं खुद उनके पीछे जाऊंगी!"

फिर मादा-साँप एक झटके में चली गई, और इतनी तेजी से भागी कि पृथ्वी हिलने लगी और उसके नीचे गड़गड़ाहट हुई. जब लड़की ने जमीन पर अपना हाथ फिराया तो उसे ज़मीन गर्म महसूस हुई.

"हम खो गए हैं, क्योंकि यह वही मादा-साँप ही है जो इस समय हमारे पीछे है!" नौकरानी चिल्लाई. "मैं तुम्हें एक नदी में और खुद को एक पर्च मछली में बदलने जा रही हूँ."

लड़की ने ऐसा ही किया, और जब मादा-साँप उड़कर ऊपर आई और उसने नदी को देखा तो उसने खुद को एक बड़ी मछली में बदल लिया और वो पर्च मछली को पकड़ने भागी. लेकिन जब भी वो उसे पकड़ने की कोशिश करती, पर्च अपने नुकीले पंख उसकी ओर घुमा देती और उसे दूर जाने के लिए मजबूर कर देती. इसलिए फिर उसने उसका पीछा करना छोड़ दिया और उसने नदी का सारा पानी पीने का फैसला किया. फिर उसने पानी पिया, और वो तब तक पानी पीती रही जब तक कि अंत में उसका पेट पानी से भरकर फट नहीं गया और फिर वो वहां पर मरकर गिर पड़ी.

लड़की और शिकारी के बेटे को उसके उचित आकार में वापस बदला, और लड़की ने कहा:

"अब हमें डरने की कोई ज़रुरत नहीं है! आओ, अब हम तुम्हारे घर चलें, लेकिन तब तुम अपने लोगों से मिलो तो केवल अपने चाचा के बच्चे को छोड़कर बाकी सभी को चूमना और गले लगाना, क्योंकि यदि तुम उस बच्चे को चूमोगे तो फिर तुम मुझे भूल जाओगे."

फिर वे गाँव लौटे और वहां लड़की एक ग्रामीण के घर में, नौकरानी का काम करने लगी. और शिकारी का बेटा अपने घर गया और अपने चाचा के बच्चे को छोड़कर उसने वहां मौजूद सभी लोगों को चूमा और गले लगाया. लेकिन फिर, यह सोचकर कि इससे उसके परिवार वाले नाराज न हों, उसने उस बच्चे भी चूम लिया और फिर वो तुरंत अपनी प्रेयसी के बारे में सब कुछ भूल गया.

लगभग आधा साल बीत गया और फिर लड़के ने शादी करने का फैसला किया. उसके लिए एक सुंदर लड़की ढूंढी गई, और उसने उसे लुभाया और जीत लिया और उसने अपनी प्रेयसी को कभी याद नहीं किया जिसने उसे सांप के चंगुल से बचाया था.

शादी की पूर्व संध्या पर गाँव की सभी युवा लड़कियों, और नौकरानी को भी, को दूल्हे के घर पर डबलरोटी पकाने के लिए आमंत्रित किया गया. वे काम पर लग गईं और तब प्रेयसी ने कबूतर के आकार की दो डबलरोटी बनाईं. उसने उन्हें फर्श पर रख दिया, और वे ज़िंदा हो गए और धीरे-धीरे कूँ-कूँ की आवाज़ें करने लगे.

"क्या तुम्हें याद नहीं कि मैं ने सारा जंगल उखाड़ कर वहां गेहूं बोया था, और उससे साँप को खिलाने के लिए रोटी बनाई थी?" एक कबूतर ने दूसरे से पूछा.

और उसके साथी ने उत्तर दिया: "नहीं, मुझे उसके बारे में कुछ भी याद नहीं है!"

"क्या तुम्हें याद नहीं है कि मैंने एक पहाड़ के नीचे एक रास्ता खोदा था और उसमें से नदी को बहाई थी ताकि व्यापारी अपनी नावों में आ सकें और तुम्हारे साथ व्यापार कर सकें?" पहले कबूतर ने पूछा.

और उसके साथी ने उत्तर दिया: "नहीं, मुझे उसके बारे में भी कुछ याद नहीं है!"

"क्या तुम्हें याद नहीं कि हमने मिलकर सुनहरे खरगोश का शिकार कैसे किया था?" पहले कबूतर ने फिर से पूछा.

और उसके साथी ने उत्तर दिया: "नहीं, मुझे उसके बारे में भी कुछ याद नहीं है!"

तभी शिकारी के बेटे को वो सब याद आया जो उसके हुआ था. फिर जिस लड़की से उसकी शादी होने वाली थी उसने उसके साथ अपनी सगाई तोड़ दी और उसके बदले में उसने उसका साथ देने वाली सच्ची प्रेयसी से शादी की, और फिर वे हमेशा खुशी-खुशी रहे.